

गुरु पूर्णिमा

29 जुलाई



शिव सायुज्य

निखिलेश्वरानन्द ब्रह्मत्व

शक्ति दीक्षा

PMYV



जीवन का अर्थ है- आनन्द अर्थात् जीवन को पूरे जोश और उत्साह के साथ जीने की कला। अपने जीवन को खुलकर जीने वाला व्यक्ति सुख-दुःख, आशा-अभिलाषा से प्रभावित नहीं होता तथा उसके जीवन का प्रत्येक क्षण खुशी, आनंद और मस्ती से व्यतीत होता है। इसके साथ ही वह अपने सपनों को पूरा करने के लिये वर्तमान का सही उपयोग करे, क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आ सकता। प्रत्येक साधक को पूर्ण ब्रह्मत्व प्राप्त करने की प्रबल ईच्छा होती है। ताकि वह अपने जीवन को अपने सद्गुरु, अपने ईष्ट की ही भांति ब्रह्म युक्त बनाकर पूर्ण सरसा आनंद तथा सुख से परिपूर्ण कर सके।

सबसे श्रेष्ठ देवताओं में से एक भगवान शिव हैं। शिव शब्द का अर्थ है “शुभता और समृद्धि प्रदान करने वाला देवता।” शिव का विलोम ‘वश’ है, जिसका अर्थ है ज्ञान प्रदान करना; अतः ज्ञान प्रदान करने वाले शिव हैं। शिव स्वयं और संसार को प्रकाशित करने वाले हैं। उच्च कोटि के रहस्यवादियों, सन्तों, ऋषियों और योगीजनों ने हमें एक ही लक्ष्य दिया है- “ईश्वर, सद्गुरु के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना।” तथा एक ऐसी स्थिति को प्राप्त कर लेना जो हमारे रोजमर्रा के जीवन को ब्रह्म के साथ जोड़ता हो। दीक्षा उसी संबंध को विकसित करने का व्यवहारिक तरीका है।

वर्तमान समय पूर्णतः चमत्कारों पर आश्रित होने लगा है। साधक बाहरी चमत्कारों के माध्यम से खुशीयाँ, धन, प्रसिद्धि, अध्यात्म, पढ़ाई-लिखाई आदि गतिविधियों को प्राप्त करने पर तुले रहते हैं। परंतु सच्चाई यह है कि चमत्कार हमारे भीतर होती है, लेकिन हम उसे बाहर ढूँढते हैं। यह स्थिति कस्तूरी मृग के समान है, जो अपनी नाभि में मौजूद कस्तूरी की सुगंध को बाहर खोजता है। जीवन का वास्तविक सत्य यही है कि खुशी हमें जिंदादिल बनाती है और यह तब मिलती है जब हम निष्काम भाव से, बिना लाभ-हानि की अपेक्षा किये कार्य करें।

संसार में दो प्रकार की अवधारणायें हैं- सकारात्मक और नकारात्मक। यह सच्चाई सामान्य प्रतीत हो सकती है, परंतु यह कड़वी हकीकत है। आज के युग में, विशेष रूप से युवा वर्ग को अपने जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होने के कारण उनके जीवन में न तो उत्साह है और न ही उमंग। उनके चेहरे बुझे हुये लगते हैं, और वे जवानी में ही वृद्ध से महसूस करने लगते हैं। वहीं, कुछ वृद्ध, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण अपनी उम्र के बावजूद ताजगी और उमंग बनाये रखते हैं। वास्तव में इस प्रकार की चेतना ही वास्तविक चमत्कार है। हालांकि, इसके साथ पारिवारिक, नैतिक और सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करना भी हमारा धर्म है। इन दोनों पहलुओं के बीच सामंजस्य बनाकर चलने से ही जीवन का वास्तविक आनंद प्राप्त हो पाता है।

गुरु केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि शिवतत्व का जीवित प्रतिनिधि हैं। गुरु के माध्यम से ही साधक शिव से जुड़ पाता है तथा वह शिव के सदृश ही प्राणिक शक्तियों को प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है। आध्यात्मिक मार्ग में सफलता प्राप्त करने के लिये शक्ति, ऊर्जा तथा संयम की अत्यधिक आवश्यकता रहती है। ऊर्जा शक्ति के माध्यम से ही वह ब्रह्मत्व शक्ति को प्राप्त कर सकता है। इन शक्तियों को प्राप्त करने हेतु गुरु पूर्णिमा पर्व ही श्रेष्ठ है। जब सद्गुरु स्वयं ब्रह्ममाण्ड की सम्पूर्ण शक्तियों से युक्त रहते हैं तथा साधक को भी अपने समान बना देना चाहते हैं। जिससे उसके अन्दर ब्रह्म तत्व का जागरण हो सके और वह पूर्णरूपेण शिव तत्व, गुरु तत्व तथा ब्रह्म तत्व से युक्त हो सकें। शिव सायुज्य निखिलेश्वरानन्द ब्रह्मत्व शक्ति दीक्षा न्यौछावर ₹1800

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 📞 7568939648

न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.: 20287318460

Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490

आश्रम: कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 📞 9950980966

सद्गुरुदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम 📱 GurudevKailash You 📺 KAILASH SIDDHASHRAM पर देखें।